



बढ़ते कदम

वर्ष-15
अंक-03
2016

पूर्व रेलवे, मालदा मंडल की सृजनात्मक हिन्दी ई-मासिकी



भारत के संविधान में राजभाषा

भाषा के प्रयोग से संबंधित विशेष निदेश

अध्याय - 4

अनुच्छेद 350. व्यथा के निवारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जाने वाली भाषा--

प्रत्येक व्यक्ति किसी व्यथा के निवारण के लिए संघ या राज्य के किसी अधिकारी या प्राधिकारी को, यथास्थिति, संघ में या राज्य में प्रयोग होने वाली किसी भाषा में अभ्यावेदन देने का हकदार होगा।

अनुच्छेद 350 क. प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएं--

प्रत्येक राज्य और राज्य के भीतर प्रत्येक स्थानीय प्राधिकारी भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के बालकों को शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की पर्याप्त सुविधाओं की व्यवस्था करने का प्रयास करेगा और राष्ट्रपति किसी राज्य को ऐसे निदेश दे सकेगा जो वह ऐसी सुविधाओं का उपबंध सुनिश्चित कराने के लिए आवश्यक या उचित समझता है।

अनुच्छेद 350 ख. भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए विशेष अधिकारी--

(1) भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए एक विशेष अधिकारी होगा जिसे राष्ट्रपति नियुक्त करेगा।

(2) विशेष अधिकारी का यह कर्तव्य होगा कि वह इस संविधान के अधीन भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए उपबंधित रक्षोपायों से संबंधित सभी विषयों का अन्वेषण करे और उन विषयों के संबंध में ऐसे अंतरालों पर जो राष्ट्रपति निर्दिष्ट करे, राष्ट्रपति को प्रतिवेदन दे और राष्ट्रपति ऐसे सभी प्रतिवेदनों को संसद् के प्रत्येक सदन के समक्ष रखवाएगा और संबंधित राज्यों की सरकारों को भिजवाएगा।

अनुच्छेद 351. हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश--

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्थानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।



विषय वस्तु

प्रसंगवश—	
—रामाशीष सिंह —	3
मेरा परिवार —	
— विनोद कुमार त्रिपाठी	4
जिंदगी की सच्चाई—	
— सुप्रिया राय	7
मुद्रा की शुरुआत —	
— यश कुमार	8
मूलहठी—	
— प्रिया मिश्रा	9
अपराध कम...	
— सच्चिदानंद जिज्ञासु	10
पेंसिल की कहानी	
— इंद्र ज्योति राय	13
अमर प्रेमकथा..	
—अश्वनी सिंह	14
कार्तिक पूर्णिमा	
— स्वीटी प्रसाद	15
हंसगुल्ले —	
— रजनी	16
नई खोजें	
— मिंटू सिंह	17
अपनी हिन्दी —	
— निशीथ कुमार	18
मुक्तक —	
— संतोष कुमार	18
चित्र वीथिका	19-20

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इससे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपर्क सूत्र

संपादक, बढ़ते कदम
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
पूर्व रेलवे/मालदा
फोन- 72190/ 72192 (रेलवे)

Email – Rajbhasha.malda@gmail.com
Web: www1.er.indianrailway.gov.in

गुरु नानक



गुरु नानक का जन्म रावी नदी के किनारे स्थित तलवंडी नामक गाँव में कार्तिकी पूर्णिमा को एक खत्रीकुल में हुआ था। इनके पिता का नाम कल्याणचंद या मेहता कालू जी था, माता का नाम तृप्ता देवी था। तलवंडी का नाम आगे चलकर नानक के नाम पर ननकाना पड़ गया। इनकी बहन का नाम नानकी था। कुछ विद्वान इनकी जन्मतिथि 15 अप्रैल, 1469 मानते हैं। किंतु प्रचलित तिथि कार्तिक पूर्णिमा ही है, जो अक्टूबर-नवंबर में दीवाली के 15 दिन बाद पड़ती है। बचपन से इनमें प्रखर बुद्धि के लक्षण दिखाई देने लगे थे। लड़कपन ही से ये सांसारिक विषयों से उदासीन रहा करते थे। पढ़ने लिखने में इनका मन नहीं लगा।

7-8 साल की उम्र में स्कूल छूट गया क्योंकि भगवत्प्रापति के संबंध में इनके प्रश्नों के आगे अध्यापक ने हार मान ली तथा वे इन्हें ससम्मान घर छोड़ने आ गए। तत्पश्चात् सारा समय वे आध्यात्मिक चिंतन और सत्संग में व्यतीत करने लगे। बचपन के समय में कई चमत्कारिक घटनाएं घटी जिन्हें देखकर गाँव के लोग इन्हें दिव्य व्यक्तित्व मानने लगे। बचपन के समय से ही इनमें श्रद्धा रखने वालों में इनकी बहन नानकी तथा गाँव के शासक राय बुलार प्रमुख थे।

इनका विवाह सोलह वर्ष की आयु में गुरदासपुर जिले के अंतर्गत लाखौकी नामक स्थान के रहनेवाले मूला की कन्या सुलखनी से हुआ था। 32 वर्ष की अवस्था में इनके प्रथम पुत्र श्रीचंद का जन्म हुआ। चार वर्ष पश्चात् दूसरे पुत्र लखमीदास का जन्म हुआ। दोनों लड़कों के जन्म के उपरांत 1503 में नानक अपने परिवार का भार अपने श्वसुर पर छोड़कर मरदाना, लहना, बाला और रामदास इन चार साथियों को लेकर तीर्थयात्रा के लिये निकल पड़े। फिर आत्मज्ञान को प्राप्त कर ईश्वर तुल्य हो गए। कहने की बात नहीं उसके बाद वे गुरु नानक कहलाने लगे। उन्होंने बताया है— हे प्यारो, अपने आपको जीतने की भट्टी में तपाओ अर्थात् इन्द्रियों और मन को विषय वासनाओं से दूर रखो, धैर्य रूपी सुनार बनो, सुमति का लौह-पिण्ड रखो और ज्ञान का हथौड़ा भी। भय की दूर करो और तपस्या की अग्नि जलाओ। तभी तुम इस संसार सागर से पार होकर परम आनंद को प्राप्त हो सकते हो।

— रामाशीष सिंह

निःशुल्क वितरण हेतु

संरक्षक	परामर्श	प्रधान संपादक	संपादक	कार्यकारी संपादक	सहयोग
मोहित सिन्हा मंडल रेल प्रबंधक	विजय कुमार साहू अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक	रामाशीष सिंह राजभाषा अधिकारी(प्रा.)	सच्चिदानंद व. अनुवादक	इंद्र ज्योति राय क. अनुवादक	दयामय दास, कनिष्ठ इंजीनियर

मेरा परिवार

बारह वर्षों से दोनों भाई अलग-अलग रह रहे थे। न तेजू को अपने बड़े भाई से कुछ लेना था, न ही राम सिंह को तेजू की किसी उन्नति से जलन थी। दोनों भाई एक ही बड़े घर को दो हिस्सों में बांट कर रह रहे थे। तेजू के बच्चों के किसी संस्कार पर न राम सिंह उसके घर जाता, न ही कभी उस परिवार से बोलता। राम बीमार होता तो तेजू भी कभी हाल चाल पूछना वाजिब नहीं समझता था। राम सिंह अपनी एक बुढ़िया बुआ और अपनी पत्नी के साथ रहते थे। बुआ अपनी शादी के एक साल बाद ही विधवा हो गई थीं। पति के मरने के गम में पागल बुआ को अपनी कोख में पल रहे पति के अमानत का भी कोई ख्याल नहीं रहा। दिन-रात रोती-रोती बुआ ने जीवन से निराश होकर अपने शरीर पर भी ध्यान देना छोड़ दिया। ईश्वर की कृपा भी कुछ उल्टी ही हुई और उन्हें सात महीनों के मृत बच्चे का मुंह देखना पड़ा।

पति के गुजर जाने का गम अभी भुला नहीं पाई थी कि कोख भी सूनी हो गई। बुआ गम के पहाड़ के नीचे ऐसे दबी की अर्द्धविक्षिप्त हो गई। राम सिंह का पिता अपनी बहन की दुर्दशा को सहन नहीं कर पाया और उन्हें अपने घर लाया। बुआ मायके वापस आ गई। राम सिंह अभी तीन-चार मास का शिशु ही था। बुआ को झूठी सांत्वना देने के लिए यह बताया गया कि उनका बच्चा मरा नहीं वरन वह जिंदा है। बुआ राम को पाकर अपने दुख धीरे-धीरे भूलने लगी। कुछ ही दिनों में उनका पागलपन भी ठीक हो गया। पर वे अपनी आंखों से पल भर के लिए भी राम को बिसरने नहीं देती और न उसको किसी को छूने देतीं। उन्हें राम की इतनी चिंता रहती कि उनकी मां भी डर के मारे उसे न उठाती।

राम तीन बरस का होने वाला था कि तेजू का जन्म हुआ। तेजू के धरती पर कदम रखते ही बुआ के दिल में वात्सल्य के साथ ही कठोरता का भी उदय हो गया। उनके हृदय में तेजू के प्रति नफरत की आंधी चलने लगी। और ऐसे में एक दिन जब तेजू अकेले आंगन में सो रहा था, बुआ उसे जमीन पर पटक कर जान से ही मार देतीं यदि राम के पिता ने ऐन वक्त पर आकर तेजू को बचा न लिया होता। तेजू के मां-बाप इस घटना से बहुत डर गए। अब वे अबोध तेजू को कभी अकेले नहीं छोड़ते। लेकिन ऐसा कब तक चलता! अंत में पति-पत्नी इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि तेजू को लेकर उसकी मां तेजू के ननिहाल चली जाए। तेजू अभी एक साल का भी नहीं हुआ था कि उसके सर से मां का साया उठ गया। इस हादसे के कुछ ही दिन बाद तेजू के पिता भी हैजे के प्रकोप के शिकार हो गए।

तेजू और राम दोनों ही अनाथ हो गए। लेकिन राम के लिए जहां बुआ अपनी ममता का आंचल फैलाए हुए थीं, वहीं ननिहाल में तेजू के लिए वात्सल्य और ममता से भरी निःसंतान मामी उसे अपनाने को तैयार बैठी थीं। मामी ने तेजू को दिल से लगाया और ईश्वर को ढेर सारा धन्यवाद दिया। उनके बुढ़ापे की लाठी मिल गई थी।

नारी यदि सबसे अधिक सबल होने का प्रमाण दे सकती है तो अपनी संतान पर संकट आने पर। और उसी के मोह में ही वह आवश्यकता से अधिक दुर्बल भी दिखाई पड़ती है। अपने-अपने शरीरों पर कष्टों को झेलते हुए बुआ और मामी राम और तेजू को पालती रहीं। दोनों भाई धीरे-धीरे बड़े होकर सिर्फ दुनिया से परिचित ही नहीं हो रहे थे वरन अपने दिलों में अपने ही भाई के लिए प्रेम के स्थान पर घोर नफरत संजोते जा रहे थे।

तेजू के बालपन से ही मामी उसके कान में घृणा का जहर भर रही थीं। उन्हें यह तो पता था ही कि तेजू को भले ही अपनी संतान की तरह पाल रही हैं, पर है तो उनकी ननद का ही बेटा। वह इस भय से कभी अपने को मुक्त नहीं कर सकी कि वह एक दिन उन्हें छोड़ कर अपने गांव लौट जाएगा। स्वार्थ की पूर्ति एवं भय के वशीभूत मामी अपना विवेक खो चुकी थीं। तेजू कहीं लौट न जाए, अतः उन्होंने तेजू के दिल में राम और बुआ के लिए स्वाभाविक प्रेम की जगह घृणा के बीज बो डाले। पर दुनिया तो कहती थी कि तेजू और राम सहोदर भाई हैं। ऊपर से चाहे जितनी भी कटुता हो, लेकिन अंतर्मन से वे भी स्वीकार कर ही रहे थे कि वे दोनों सगे भाई ही हैं।

गांव में महामारी का प्रकोप चल रहा था, मामी भी उसकी चपेट में आ गई। तेजू ने वह सब कुछ किया, जो एक बेटा अपनी मां के लिए करता है। पैसों का अभाव तो था ही। मामी की सारी जमीन बिक गई दवा-दारू में, फिर भी मामी बची नहीं। मामी ने मरते समय तेजू से यह कह ही दिया- “तेजू, राम तेरा बड़ा भाई है और अब तक मैंने जो कुछ भी किया है, सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए किया है। जो कुछ भी जमीन-जायदाद बची थी, वह भी तूने मुझ पर लुटा दी। पर चिंता कि कोई बात नहीं। राम से तू अपना हिस्सा ले लेना। तेजू को अपने बच्चों और पत्नी के साथ गांव आया देखकर बुआ को सबसे अधिक कष्ट हुआ। उन्हें लग रहा था कि जमीन-जायदाद में अब तेजू को भी हिस्सा देना पड़ेगा। अब तक राम सिंह एक बलिष्ठ पहलवान के रूप में विख्यात हो चुका था। उस समूचे क्षेत्र में लाठी चलाने में उसका कोई सानी नहीं रह गया था। वहीं तेजू मरियल सा हीन काया वाला बन कर रह गया था।

पर उससे क्या, भाई नमक का भी हो तो हिस्सा देना ही पड़ेगा। राम सिंह को तेजू को हिस्सा देना बुरा नहीं लगता था पर बुआ के कारण वह चुप रह जाता। वैसे रामसिंह और उसकी पत्नी तेजू के भरे-पूरे परिवार को देखकर फूले नहीं समाए। उन्हें लगा कि उन्हें निःसंतान होने का कोई गम नहीं रह जाएगा। बच्चे भले तेजू के ही हैं पर अब इस सूने घर में भी किलकारियां तो गूंजेंगी। दो-चार दिनों में ही राम सिंह और उसकी पत्नी के दिलों में बच्चों के लिए स्नेह उमड़ पड़ा। बच्चे तो स्नेह के लिए भूखे रहते हैं। बस क्या था, वे दिन-रात ताई और ताऊ के ईर्द-गिर्द घूमते दिखाई पड़ने लगे।

यह बात न बुढ़िया बुआ को भाती और न तेजू की पत्नी को। तेजू से वह इसकी रोज-रोज शिकायत करती* परंतु बच्चे थे कि बार-बार मना करने पर भी न मानते। उन्हें तो ताई और ताऊ ही अच्छे लगते। ताई को देवर के बेटों को पाकर ऐसा लगा कि उनका बांझपन जाता रहा है। लेकिन यह आत्मीयता और वात्सल्य तेजू की पत्नी को अखरने लगे। पड़ोस की महिलाओं को काम तो कुछ रहता ही नहीं था। वे तेजू की पत्नी को बुढ़िया बुआ और राम सिंह की बीवी से बच्चों को दूर ही रखने की सलाह देतीं। ठीक इसी तथ्य को उलट कर राम सिंह की पत्नी को भी यही बतातीं कि उनकी देवरानी अपने बच्चों को उनके पास देखना नहीं चाहतीं। पड़ोसी भी कैसी चीज है! जब दो भाइयों में प्यार देखे तो उनका दिल जले और घृणा देखे तो ओप्फ-ओप्फ करें।

राम सिंह की बीवी और तेजू सिंह की पत्नी में तो मन में बिठाई गई घृणा पहले से थी ही। बच्चों को लेकर खटर-पटर रोज-रोज के द्वंद में बदल गई। बच्चों के आने से भाइयों के बीच अपनेपन की जो कुछ भी नमी थी, पड़ोसियों ने उन्हें फिर से दहकाकर सुखा देने का काम किया। सप्ताह बीतते-बीतते दोनों परिवारों का एक साथ रहना मुश्किल हो गया। स्थिति उस दिन और बदतर हो गई जब तेजू ने भाभी के ऊपर हाथ उठा दिया। बुआ को तो अब मसाला ही मिल गया और उन्हें समूचे घर में लंका दहन प्रारंभ करवा दिया। पत्नी के आंसुओं और बुआ की बारूदी आवाज ने राम को इतना उत्तेजित किया कि यदि तेजू उस समय मिल जाता तो जिंदा नहीं बचता।

घर की स्थिति इतनी दुखदायी हो गई कि उसने घर से शांति को निकाल कर दूर फेंक दिया। राम और तेजू के लिए एक साथ एक ही घर में रहना संभव नहीं रहा। दोनों ने अलग-अलग रहने का फैसला कर लिया। लेकिन बुआ तेजू को जमीन का एक टुकड़ा भी नहीं देना चाहती थीं। राम सिंह बेचारा चुप रहने के लिए बाध्य था। हार कर तेजू को पंचायत में जाना पड़ा। पंचायत के फैसले के मुताबिक तेजू को आधी जमीन और आधा घर मिल गया। घर के बीचों-बीच से दीवार खड़ी कर दी गई। भाई-भाई फिर पराए हो गए। बुआ भी कुछ ही दिनों में स्वर्ग सिधार गई। पर उनका बोया हुआ बीज अब फल रहा था। दोनों भाई एक ही घर के इस पार, उस पार रहते पर एक-दूसरे से कभी भूले-भटके भी कोई बात नहीं करते। देखते-देखते तीन वर्षों का समय बीत गया। लेकिन अब तक दोनों भाइयों में बोलचाल नहीं हो सकी। तेजू के बेटे-बेटियों के संस्कारों पर भी राम सिंह नहीं आए और न तेजू ने बुलाने की ही कोशिश की।

सब कुछ किसी निश्चित दिनचर्या की तरह चल रहा था कि तभी यह व्यवधान उत्पन्न हो गया। राम सिंह अपने दरवाजे पर बैठ कर बीड़ी पीते हुए सामने नाद पर बंधे पशुओं की ओर देख रहे थे कि किसी ने आकर बताया- “राम सिंह, तुम यहां बैठे हो! दलवीर सिंह के भाइयों ने तुम्हारे भाई को खेत में मार कर बेहोश कर डाला है। डर के

मारे कोई गांव वाला भी उसे देखने तक नहीं जा रहा है।”

तेजू सिंह अपने खेत पर बहोश पड़ा था। चोट सिर पर लगी थी। पैर की एक हड्डी भी टूट गई थी। दलवीर सिंह के परिवार वालों ने अपने खेत में बैल घुस जाने के कारण उसे मारा था। दलवीर सिंह के खेत में तेजू के बैल का खूंटा तुड़ा कर घूस जाना तो मात्र एक बहाना था। राम सिंह के बाप-दादा के समय से ही यह झगड़ा चला आ रहा था। आज उन्हें पट्टीदारी की पुश्तैनी दुश्मनी साधने का मौका मिल गया था।

एक छोटे से बहाने पर तेजू सिंह घालय कर दिए गए। सहसा यह वाक्य सुनकर राम सिंह कुछ सोच नहीं पाए कि क्या हुआ? पर उनके मस्तिष्क में यह बात कौंध जरूर गई कि उनके ही भाई तेजू को मारा गया है। जिसे अपनी भुजाओं पर विश्वास हो, जिसकी लाठी के सामने एक साथ कई लोग भी टिक नहीं सकते, जो इस इलाके का सबसे बड़ा लाठीबाज हो और उसी के भाई को कुछ लोग बिना वजह लाठियों से घायल कर दें! विचारों के अंधड़ चलने लगे मस्तिष्क में। नथुने फड़क उठे, नसें फूल गईं। राम सिंह इसी आवेग में उठा और लाठी उतारने के लिए दालान के भीतर घुसा।

राम की लाठी के आगे दलवीर सिंह और उसके भाइयों का टिक पाना संभव नहीं था। लगभग दस-पंद्रह मिनट में ही दलवीर सिंह के चार भाई घायल हो गए और तीन भाग खड़े हुए। दलवीर सिंह की मंशा पर पानी फिर गया। उन्होंने तो सिर्फ यही सोचा था कि मरियल तेजू भला क्या कर सकेगा! उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था कि तेजू के लिए राम सामने आएगा। इतने वर्षों तक जिस भाई ने तेजू से बोला तक नहीं हो, वह भला झगड़े में क्यों आएगा? लेकिन लहू भी पुकारता है, इस घटना ने यह साबित कर दिया था। गांव वाले इस अनहोनी पर चकित थे। लिहाजा उस घटना के कोई पक्ष और कोई विपक्ष की आलोचना में जुटा था। राम सिंह अपनी पीठ पर लाद कर तेजू को घर लाए। पत्नी को बोले- “देखो इसे कहां चोट लगी है। जल्दी से हल्दी पीस कर घावों पर लगा दो।”

तेजू की पत्नी और दोनों बच्चे ननिहाल में थे। तेजू यहां अकेले रहते थे। राम ने तेजू के बाल-बच्चों को बुलाने के लिए एक आदमी भेज दिया और सभी को तुरंत साथ आने के लिए ताकीद कर दिया। लेकिन भेजे जाने वाले आदमी से कुछ भी बताने को मना भी कर दिया था। तेजू अब थोड़ा ठीक हो गया था। राम सिंह उसके पास आता और चुपचाप उसे सिर्फ देख लेता, किंतु उससे कुछ बोलता नहीं था। राम सिंह ने भले ही तेजू से अब भी बोल चाल बंद रखी थी पर उनकी पत्नी ने तेजू को अपना समझ कर काफी सेवा सुश्रुषा की। राम सिंह अपनी पत्नी से तेजू की तबियत के विषय में थोड़ी-थोड़ी देर में अवश्य पूछ लेता।

तेजू के दिल में भाई और भाभी के प्रति जो नफरत थी वह तो कब की धुल चुकी थी। उसे पत्नी के आने के पूर्व कभी ऐसा नहीं लगा कि वह अकेला और असहाय है। लेकिन अब भाई की चुप्पी किसी डंक की तरह लग रही थी। वह मायके से उसी पल चल दी थी। लेकिन उसका मन किसी अनहोनी की आशंका से घबड़ा रहा था। लाने वाले आदमी से रास्ते में जब पति का समाचार सुना तो वह पागल हो उठी। उसके घर पहुंचने के पहले ही रास्ते में लोगों ने नमक-मिर्च लगा कर घटना का बयान किया। कल के वही पड़ोसी आज राम सिंह और उसकी पत्नी का गुणगान कर रहे थे। मन में बैठी घृणा भाई-भाभी के लिए श्रद्धा में बदलती जा रही थी। उसे लग रहा था, सचमुच परिवार के बंट जाने के लिए सिर्फ वह और वही जिम्मेदार थी।

पत्नी और बच्चों को देखते ही तेजू रो पड़ा। भाभी के पैरों पर गिरते हुए उसने कहा- “मुझे माफ कर देना भाभी!”

उसकी पत्नी और बच्चे भी सिसक उठे। राम सिंह की भावज सुबकते हुए बोली- “भैया, आप तो सबसे बड़े हैं! क्या अब भी आप हम लोगों को माफ नहीं करना चाहते!”

भावज की इस बात में जाने क्या जादू था कि पत्थर की तरह कठोर और पर्वत की भांति वर्षों तक अपनी जिद पर अड़े रहने वाले राम सिंह का भी गला भर आया। वह बनते-बिगड़ते शब्दों में किसी तरह बोल सके- “मैं भी तो यही चाहता था कि मेरा परिवार सिर्फ मेरा ही रहे।”

— विनोद कुमार त्रिपाठी

जिंदगी की सच्चाई

बसंतपुर नामक एक गांव में लखींद्र नाम का एक साहूकार रहता था। गांव के लोग उसे लखी सेठ के नाम से पुकारा करते थे। साहूकार स्वभाव का बहुत अच्छा था। वह लोगो के सुख दुःख में उनके साथ खड़ा रहता था। आम साहूकारों की तरह वह पैसो के पीछे नहीं भागा करता था। साहूकार की एक बात सबसे निराली थी कि उसने कुल चार शादियां की थी। दरअसल उसकी कोई संतान नहीं थी और संतान की चाह में उसने एक के बाद एक चार शादियां कर डाली थी।

वह अपनी चौथी पत्नी से बहुत प्यार करता था और उसकी खूब देखभाल करता। वह अपनी तीसरी पत्नी से भी प्यार करता था और हमेशा उसे अपने मित्रों को दिखाना चाहता था। हालांकि उसे हमेशा डर था की वह कभी भी किसी दूसरे इंसान के साथ भाग सकती है। वह अपनी दूसरी पत्नी से भी प्यार करता था। जब भी उसे कोई परेशानी आती तो वह अपनी दूसरी पत्नी के पास जाता और उसकी समस्या सुलझा देता। वह अपनी पहली पत्नी से प्यार नहीं करता था जबकि पत्नी उससे बहुत गहरा प्यार करती थी और उसकी खूब देखभाल करती। एक दिन साहूकार बहुत बीमार पड़ गया। उसने अपने इलाज के लिए शहर से एक बड़े हकीम को गांव बुलाया।

हकीम ने साहूकार की नाड़ी देखी। उसकी नाड़ी काफी सुस्त चल रही थी। हकीम ने साहूकार से कहा-आपको राज रोग हो गया है और अब इस का कोई इलाज नहीं है। साहूकार समझ गया कि था की जल्दी ही वह मर जाएगा। उसने अपने आप से कहा, "मेरी चार पत्नियां हैं, उनमें से मैं एक को अपने साथ ले जाता हूँ...जब मैं मरू तो वह मरने में मेरा साथ दे।" तब उसने चौथी पत्नी से अपने साथ आने को कहा तो वह बोली, "नहीं, ऐसा तो हो ही नहीं सकता, आप की मृत्यु निश्चित है और मैं भला आपके साथ जाकर अपनी बाकी बची जिंदगी नष्ट नहीं कर सकती हूँ। यह कहकर वह चली गयी।

उसने तीसरी पत्नी को बुलाया और उससे पूछा तो वह बोली, "जिन्दगी बहुत अच्छी है यहाँ जब आप मरोगे तो मैं दूसरी शादी कर लूंगी।"

फिर उसने दूसरी पत्नी से पूछा तो वह बोली, "मुझे तो आप माफ़ कर दो, मैं आपकी कोई मदद नहीं कर सकती, ज्यादा से ज्यादा मैं आपको जलाने तक आपके साथ रह सकती हूँ।"

अब साहूकार का दिल ठंडा पड़ गया। तब एक आवाज़ आई, "मैं आपके साथ चलने को तैयार हूँ। आप जहाँ जाएँगे मैं आपके साथ चलूंगी।" साहूकार ने जब देखा तो सामने उसकी पहली पत्नी थी। वह बहुत बीमार थी। खाने पीने के अभाव में बूढ़ी सी लगने लगी थी।

साहूकार पश्चाताप के आंसू के साथ बोला, "मुझे तुम्हारी अच्छी देखभाल करनी चाहिए थी और मैं कर सकता था, लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया यह मेरी भूल थी और आज जब मेरी ऐसी स्थिति है तो मेरे खराब व्यवहार के बाद भी तुम मेरे साथ चलने को तैयार हो। यह कहकर उसकी आंखों से आंसू छलक पड़े। दरअसल हम सब की चार पत्नियां हैं जीवन में। चौथी पत्नी हमारा शरीर है। हम चाहें जितना सजा लें संवार लें पर जब हम मरेंगे तो यह हमारा साथ छोड़ देगा। तीसरी पत्नी है हमारी जमा पूँजी, रुतबा। जब हम मरेंगे तो ये दूसरों के पास चले जायेंगे। दूसरी पत्नी है हमारे दोस्त व रिश्तेदार। चाहें वे कितने भी करीबी क्यों ना हों मरने के बाद हद से हद हमारे अंतिम संस्कार तक साथ रहते हैं।

पहली पत्नी हमारी आत्मा है, जो सांसारिक मोह माया में हमेशा उपेक्षित रहती है। यही वह चीज़ है जो हमारे साथ रहती है जहाँ भी हम जाएँ इसलिए कुछ देना है तो इसे दो। देखभाल करनी है तो इसकी करो प्यार करना है तो इससे करो

— सुप्रिया राय

मुद्रा की शुरुआत

आप संसार में तभी महत्वपूर्ण हो सकते हैं जब तक आप के पास ऐसा कुछ है जो पैसे से खरीदा ना जा सके। लेकिन पैसे का महत्व इससे कुछ कम नहीं होता क्योंकि संसार का कार्य-व्यापार पैसे से ही चलता है। यहां हम मुद्रा की शुरुआत से लेकर अबतक की बहुत कुछ जानकारियों को समाहित करना चाहते हैं-

1. भारत में मुद्रा 2500 साल पहले एक राजा द्वारा शुरू की गई थी।
2. सन् 1917 में 1 रुपया का मूल्य 13\$ डालर के बराबर हुआ करता था। 1947 में भारत जब आजाद हुआ तो 1 रुपया = 1\$ डालर हो गया फिर धीरे-धीरे भारत पर कर्ज बढ़ने लगा तो इंदिरा गांधी ने कर्ज चुकाने के लिए रुपये की कीमत कम करने का फैसला लिया। उसके बाद से आज तक रुपये की कीमत घटती आ रही हैं।
3. आरबीआई ने जनवरी 1938 में पहली बार 5 रुपये की पेपर करंसी छपी थी जिस पर किंग जार्ज-6 का चित्र था। इसी साल 10,000 रुपये का नोट भी छपा गया था लेकिन 1978 में इसे पूरी तरह बंद कर दिया गया।
4. सुरक्षा कारणों से नोट के सीरियल नंबर में I, J, O, X, Y, Z अक्षर नहीं रखे जाते हैं।
5. भारतीय नोट पर किसी न किसी चीज की फोटो छपी होती हैं जैसे- 20 रुपए के नोट पर अंडमान आइलैंड की तस्वीर है। वहीं, 10 रुपए के नोट पर हाथी, गैंडा और शेर छपा हुआ है, जबकि 100 रुपए के नोट पर पहाड़ और बादल की तस्वीर है। इसके अलावा 500 रुपए के नोट पर आजादी के आंदोलन से जुड़ी 11 मूर्ति की तस्वीर छपी हैं।
6. भारतीय नोट पर उसकी कीमत 15 भाषाओं में लिखी जाती हैं।
7. 1 रुपया में 100 पैसे होंगे, ये बात सन् 1957 में लागू की गई थी। पहले इसे 16 आने में बाँटा जाता था
8. भारतीय नोट पर महात्मा गांधी की जो फोटो छपती हैं वह 1996 में नोटों पर छपनी शुरू हुई थी। इससे पहले महात्मा गांधी की जगह अशोक स्तंभ छपा जाता था।
9. भारत के 500 और 1,000 रुपये के नोट नेपाल में नहीं चलते थे।
10. 500 रुपये का पहला नोट 1987 में और 1,000 रुपये का पहला नोट सन् 2000 में बनाया गया था। पांच हजार और दस हजार के नोट 1954 से लेकर 1978 तक चलन में थे। फिलहाल 1,000 रुपये का नोट बंद हो चुका है और 500 रुपये का नया नोट मार्केट में आ रहा है।
11. भारत में 75, 100 और 1,000 मूल्य के भी सिक्के छप चुके हैं।
12. 1 रुपये का नोट भारत सरकार द्वारा और 2 से 1000 रुपये तक के नोट आरबीआई द्वारा जारी किये जाते हैं।
13. 10 रुपये के सिक्के को बनाने में 6.10 रुपये की लागत आती हैं।
14. नोटों पर सीरियल नंबर इसलिए डाला जाता हैं ताकि आरबीआई को पता चलता रहे कि इस समय मार्केट में कितनी करंसी हैं।
15. रुपया भारत के अलावा इंडोनेशिया, मॉरीशस, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका की भी करंसी हैं।
16. आरबीआई भारत के लिए हर साल 2000 करोड़ करंसी नोट छापती हैं।
17. एक समय पर भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए गैर सरकारी संस्था द्वारा भी नोट जारी किए गए थे।
18. रुपये के वर्तमान चिन्ह को 2010 में उदय कुमार ने बनाया था। इसके लिए इनको 2.5 लाख रूपयें का इनाम भी मिला था।
19. आरबीआई किसी भी मूल्यवर्ग के नोट छाप सकती हैं पर उसे 10,000 रुपये के ऊपर के नोट छापने हैं तो उसको रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया एक्ट, 1934 में बदलाव करना होगा।

मुलहठी

मुलहठी नाम से प्रचलित वृक्ष की जड़ के लंबे टुकड़े का नाम है। इसका उत्पत्ति स्थान अफगान प्रदेश होने के कारण सामान्यतः वहीं की भाषा में 'रब्बुस्सूस' नाम से पुकारते हैं।

असली मुलहठी अन्दर से पीली, रेशेदार व हल्की गंध वाली होती है। ताजी जड़ तो मधुर होती है, पर सूखने पर कुछ तिक्त और अम्ल जैसे स्वाद की हो जाती है। विदेशी आयातित औषधियों में मिश्री मुलहठी को सर्वोत्तम माना गया है। उत्तम मुलहठी में किसी भी प्रकार की तिक्तता नहीं पायी जाती है। यदि मुलहठी को गंधकाम्ल (सल्फ्यूरिक एसिड 80 प्रतिशत वी.वी.) में भिगाया जाए तो वह शेष पीले रंग का हो जाता है। यह पहचान का एक आधार है।

ताजा मुलहठी में 50 प्रतिशत जल होता है जो सुखाने पर मात्र दस प्रतिशत रह जाता है। इसका प्रधान घटक जिसके कारण यह मीठे स्वाद की होती है, ग्लिसराइजिन होता है जो ग्लिसराइजिक एसिड के रूप में विद्यमान होता है। यह साधारण शक्कर से भी 50 गुना अधिक मीठा होता है। यह संघटक पौधे के उन भागों में नहीं होता जो जमीन के ऊपर होते हैं। ग्लिसराइजिन के अतिरिक्त इसमें आएसो लिक्विरिटन, ग्लूकोज, सुक्रोज, रेजी, उड़नशील आदि रसायन घटक भी होते हैं।

मुलहठी मुख में डालने पर मुख में विद्यमान लार ग्रंथियों को उत्तेजित कर भोज्य पदार्थों के पाचन परिपाक में सहायक सिद्ध होता है। मुलहठी का घनसत्व काले या लाल रंग के टुकड़ों में मिलता है।

मुलहठी की विशेषताएं

1. मुलेठी मुख, गले, पेट रोग, अल्सर, कफ, के रोगों में बहुत उपयोगी है।
2. यह कफ को सरलता से निकलने में मदद करती है। यह दमा में उपयोगी है।
3. मुलेठी चबाने से मुंह में लार का स्राव बढ़ता है। यह आवाज़ को मधुर बनाती है।
4. यह श्वसन तंत्र संबंधी विकारों, कफ रोगों, गले की खराश, गला बैठ जाना आदि में लाभप्रद है।
5. यह गले में जलन और सूजन को कम करती है।
6. यह पेट में एसिड का स्तर कम करती है।
7. यह जलन और अपच से राहत देती है तथा अल्सर से रक्षा करती है।
8. पेट के घाव, अल्सर, पेट की जलन, अम्लपित्त में मुलेठी बहुत लाभप्रद है। मुलेठी में मौजूद ग्लाइकोसाइड्स पेट के घाव को भर देती है।
9. अम्लपित्त में इसका सेवन तुरंत ही एसिड को कम करता है।
10. यह कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करती है।
11. यह शरीर की इम्युनिटी बढ़ाती है।
12. यह वीर्य को शुद्ध करती है।
13. यह खून को पतला करती है।
14. कफ, पुरानी खांसी, जुखाम, गले की खराश, सूजन आदि दूर होते हैं।
15. गले के रोग जैसे गले की सूजन, जुखाम, सांस नली में सूजन, मुंह में छाले, गला बैठना आदि में इसका टुकड़ा मुंह में रख कर चूसना चाहिए।
16. हिचकी आने पर मुलेठी का एक टुकड़ा चूसें।

— प्रिया मिश्रा

अपराध कम क्यों नहीं होता !

अपराध कम क्यों नहीं होता पर जब हम गहन विचार करते हैं तो ज्ञात होता है कि सचमुच अपराध को खत्म करने का कोई भी तहे दिल से प्रयास नहीं करता है। कारण ऐसा करने से सबकी दुकानदारी ही समाप्त हो जायेगी, न कोर्ट रहेगा न कचहरी, न वकील बाबू रहेंगे न जज साहब, न मुंशी न पटवारी, न थाना रहेगा न दारोगा बाबू तो आप ही बताइये कितनी बेरोजगारी बढ़ जायेगी! इस समाज का तानाबाना ही छिन्न भिन्न हो जायेगा। भला इस कमाऊँ अपराध को क्यों जड़ से खत्म करें कोई ! बस सभी अपनी स्वार्थ की रोटी सेकते हैं।

तभी तो एक व्यक्ति किसी की हत्या करता है या बलात्कार करता है और न्यायालय में इंसाफ के लिए जाता है और न्यायालय के पेंच में या मकड़जाल में बेचारा 20 साल तक उल्टे पांव लटके रहता है, इस 20 वर्षों में उनकी सारी जमापूंजी के साथ- साथ यौवन भी बुढ़ापे में तबदील हो जाता है और क्या तब भी वास्तव में न्याय मिल पाता है ? दोषी को 5 वर्षों की सजा! क्या इसे ही इंसाफ कहते हैं तबतक वह हत्यारा या बलात्कारी सैकड़ों हत्याएं कर चुका होता है। सैकड़ों बलात्कार कर चुका होता है, तो इसे इंसाफ कहना न्यायोचित कहा जा सकता है क्या ? और यदि न्याय की यही परम्परा रही तो अपराध कैन्सर की भाँति बढ़ता ही जायेगा। कोई सरकार इस पर कुछ नहीं कर पायेगी।

आप पूछेंगे तो न्याय कैसा होना चाहिए ? न्याय टिट फोर टैट होना चाहिए, तुरंत होना चाहिए जैसे पहले राजतंत्र में होता था। इसके लिए न्याय की मोटी मोटी किताबों को जला देना होगा, नए विधान तैयार करना होगा कुछ मामलों को छोड़कर न्याय हर हालत में 7 दिनों के भीतर करना सुनिश्चित करना होगा। एक उदाहरण पेश करता हूँ रेलगाड़ी के डिब्बों में 500 लोगों के बीच 2 अवारा लड़के पिस्तल लेकर आते हैं और भय दिखाकर सबकुछ लूट कर गाड़ी की चेन खींचकर चले जाते हैं आखिर क्यों ? इसके लिए उत्तरदायी कौन है। यह गंभीर समस्या है।

ऐसे कृत्यों के लिए मेरी समझ से आज की कानून व्यवस्था है, इस व्यवस्था में आदमी जितना असमाजिक तत्वों से नहीं डरता उतना कानूनी पचड़ों से डरता है। कानून के रखवाले सिपाही हैं उन्हीं के भय के कारण कोई व्यक्ति इन गुंडों से भिड़ना नहीं चाहता क्योंकि सभी सोचते हैं कौन पुलिस के लफड़ा में पड़े। बदमाशों ने लूट लिया, किसी की हत्या कर दिया या बलात्कार किया इसके लिए अलग कानून है, अगर आप बदमाश को मार दीजिए देखिए कानून का स्वरूप बदल जायेगा आपको इतना परेशान पुलिस करेगी कि जीवन में आप लूट जाना पंसद करेंगे लेकिन मुकाबला करना भूल जायेंगे और इसी को देखकर समाज के अन्य व्यक्ति भी जीवन में कभी गुंडों से मुकाबला करने का साहस नहीं जुटा पाते हैं।

होना तो यह चाहिए कि सरकार ऐसा कानून बनाए कि जो भी व्यक्ति उस लूटेरा गुंडा को पकड़कर पुलिस के हवाले कर देगा उसे 2 लाख का नकद पुरस्कार या पुलिस विभाग में नौकरी ! यदि मुठभेड़ में बदमाश गुंडा मारा जाता है तो सिर्फ पुलिस यह पता लगाने की कोशिश करेगी कि क्या मारनेवाले व्यक्ति से कोई दुश्मनी तो नहीं थी तथा क्या लूटेरा गुंडा सचमुच में गुंडा है या नहीं। इसकी जाँच गाड़ी में सवार सहयात्रियों से पूछताछ कर आसानी से किया जा सकता है और सचमुच में गुंडा साबित होने पर इसके लिए कोई कोर्ट कचहरी में केस मुकदमा होने का प्रावधान नहीं होना चाहिए बल्कि मारने वाल जांबाज को एक लाख नकद पुरस्कार से सम्मानित किया जाना चाहिए, अगर ऐसा कानून बने तो फिर छिनताई, बलात्कार पर स्वतः लगाम लग जायेगा।

देश की प्रधान मंत्री स्वर्गीय इंदरा गांधी को सरेआम गोली से छलनी करने वाले अपराधी को वर्षों तक मेहमान की भांति जिन्दा रखने का तर्क समझ के परे है। उसकी सुरक्षा पर भी करोड़ों रुपया जल की भांति बहाने का क्या अर्थ है? बस किसके कहने पर मारा गया, इसमें किसका-किसका हाथ है जैसे चंद सवालियों का उत्तर जान लेने के बाद उसे भी खुले मैदान में गोलियों से छलनी कर देना चाहिए तभी कहा जायेगा न्याय मिला तथा टिट फॉर टैट की उक्ति चरितार्थ होगी। इसे देख कर दूसरा गुंडा अपराध करने से पहले लाखों बार सोचेगा।

सचमुच ऐसा कानून होता तो वकील बाबू पुलिस और जज साहब सब के सब बेकार नहीं हो जायेंगे ? इससे बेरोजगारी नहीं फैल जायेगी जिसको लाखों लोगों ने अपनी खुली आँखों से देखा हो तो उसके लिए किसी कोर्ट में मामला दर्ज करने के बजाय उसका फैसला तुरंत होना चाहिए। दूसरा उदाहरण देखा जाए- मान लीजिए एक चोर किसी के घर से 50 हजार की चोरी करता है और पुलिस उसे पकड़ लेती है तो आज के नियम के अनुसार चोरी जिनकी हुई है उसे उसकी रकम लौटा दी जाती है और चोर को जेल भेजा जाता है। फिर वकील साहब उस चोर का मोटी रकम लेकर बेल करा देते हैं ताकि फिर चोरी कर सके और वकील बाबू को अपनी फीस हर तारीख पर देते रहे।

जबकि होना तो यह चाहिए कि चोरी का माल 50 हजार से 5 गुणा अधिक अर्थात् 25000 उससे वसूल कर चोरी किये गये व्यक्ति को मिलना चाहिए तथा जब तक कोर्ट में इसके विरुद्ध मामला चले उसे किसी भी हालत में बेल नहीं मिलना चाहिए। बेल मिलने का अर्थ ही है उसे चोरी और अपराध करने की छूट देना। अब वह और बड़ा अपराध करेगा क्योंकि उसे वकील बाबू को फीस भी देनी है और अपनी गृहस्थी भी चलानी है। कुछ थाने को भी भेंट चढ़ानी है तो क्या इस कानून प्रणाली से अपराध रुकेगा या बढ़ेगा ? एक अहम सवाल है।

तीसरा उदाहरण यदि कोई व्यक्ति किसी का बलात्कार कर देता है, और जांच प्रक्रिया से सिद्ध हो जाता है कि सचमुच बलात्कार उसी व्यक्ति ने किया है तो आज के नियमानुसार कानून बलात्कारी को 5 या 7 साल की सजा देती है। यह सरासर गलत है। इससे बलात्कारी और निर्भय होकर बलात्कार करेगा या दूसरा व्यक्ति भी बलात्कार करने से नहीं डरेगा। होना यह चाहिए कि बलात्कार की शिकार महिला या लड़की से पूछा जाना चाहिए क्या तुम इससे शादी कर सकती है इसके लिए उसकी सम्पत्ति का आधा हिस्सा तुम्हारे नाम पहले किया जायेगा बाद में तुमसे शादी होगी और शादी के पश्चात यदि वह तुम्हारी हत्या कर देता है तो जांच में सत्य पाने जाने पर उसका लिंग काट दिया जायेगा ताकि वह न तो दूसरी शादी के योग्य रहे न बलात्कार करने के बारे में सोच भी सके। यदि लड़की शादी करने से इन्कार भी कर दे तो उसकी आधी सम्पत्ति दिया जाए। यदि लड़की सम्पत्ति लेना मंजूर नहीं करे तो उसे नपुंसकता का इंजेक्शन देकर उसे फिर न तो बलात्कार योग्य बना दिया जाए। ताकि वह दूसरी शादी करने के योग्य ही नहीं रहे।

चौथा उदाहरण यदि कोई बाहुबली या धन्नसेठ किसी गरीब की हत्या कर देता है या करवा देता है तो अपराध सिद्ध होने पर यदि अनेक लोगों के बीच यह घटना घटी हो तो एक सप्ताह के भीतर न्याय कर उसकी आधी सम्पत्ति मृतक के परिवार को मिलना चाहिए ताकि उसके बाल बच्चों का भरण पोषण बाप के अभाव चल सके।

यदि कोई गुंडा आतंक का पर्याय बन गया हो तो उसके लिए सरकार जनता को अधिकार के साथ साथ उससे मुकाबले हेतु हथियार देकर यह घोषणा करेगी कि जो उस गुंडा को मार गिरायेगा उसे 5 लाख नकद पुरस्कार दिया जायेगा या पुलिस में नौकरी। आप देखेंगे अपराध स्वतः खत्म हो जायेगा। इतना थाना कचहरी की आवश्यकता नहीं रहेगी। यदि सरकारी पुलिस ही उसे पकड़ लेती है तो पुलिस को भी कुछ नकद पुरस्कार या प्रमोशन मिलना चाहिए तथा गुंडा को ऐसा इंजेक्शन दिया जाना चाहिए ताकि वह चलने फिरने के लायक नहीं रहे।

एसा कानून होने से जेल में खिचड़ी खिलाने की भी जरूरत नहीं पड़ेगी। और सरकार को राजस्व की भी बचत होगी। बलात्कारी को नपुंसक बना देनेवाला इंजेक्शन दिया जाना चाहिए हत्यारा देशद्रोही को अंधा बना देना चाहिए या अपंग बना दिया जाना चाहिए ताकि फिर वह दुबारा अत्याचार नहीं कर सके।

मगर अपने देश में प्रजातंत्र है। प्रजा का शासन होना चाहिए इसीलिए प्रजा ही अधिक परेशान है। प्रजा के पास ब्रह्मास्त्र है जिसका प्रयोग वह एक बार वोट देकर गवां देती है तथा जिसको भी वोट देती है वह मालेमाल हो जाता है। वह प्रजा सेवक से प्रजापालक, मालिक, हमारा भाग्य विधाता बन जाता है। फिर उस पर कोई कानून लागू नहीं होता क्योंकि वह भाई मंत्री है देश का नायक हैं। चाहे वह लूट करे चाहे वह जो करे क्योंकि मंत्री का उसे अधिकार प्राप्त है। उन्हें फ्री में मकान मुफ्त में सारी सुख सुविधा मिलती है जबकि देश का मामूली कर्मचारी, किसान, मजदूर पर नाना प्रकार के टैक्स लगाया जाता है, यदि नहीं लगेगा तो फिर हमारे नेता मंत्री कैसे गुलछर्रे उड़ायेंगे? एक पिउन की भर्ती हेतु नाना प्रकार की परीक्षा जाँच होती है परन्तु मंत्री महोदय के लिए कोई मापदंड नहीं।

एक कर्मचारी 60 वर्ष में सेवा से अवकाश पा जाते हैं परन्तु देश के मंत्री जब तक जीते हैं तबतक कुर्सी पर रहते हैं। उनके लिए आखिर कोई नियम क्यों नहीं? क्योंकि वह देश का मालिक है, सर्वेसर्वा है, फिर उसकी जो इच्छा हो करे। कर्मचारी का वेतन बढ़ाने हेतु वेतन समिति है परन्तु मंत्री महोदय अपना हाथ उठाकर स्वयं जब चाहे अपना भत्ता बढ़ा लेते हैं क्योंकि वह कर्मचारी तो है नहीं, नहीं जनता का सेवक, वह तो देश का कर्णधार है उन्हें ऐसा करने का अधिकार हम जनता ने बोट देकर दिया है। वह खूब सब कुछ कर सकता है जो उसकी मर्जी होगी।

— सच्चिदानन्द जिज्ञासु

**मौका सबको मिलता है बस अपनी बारी
का इंतज़ार करो!!**

**आलोचना सहने की आदत
डालिए ! इससे ना केवल आपकी
कमजोरियां दूर होगी, वरन
आत्मशक्ति भी जाग्रत होगी !**

**सुख और दुःख सिक्के के दो
पहलू हैं, सुख जब मनुष्य के
पास आता है, तब दुःख का
मुकुट पहनकर ही आता है !**

— स्वामी विवेकानंद

पेंसिल की कहानी

करिने से लिखे हुए खूबसूरत अक्षर भला किसे नहीं भाते । अक्षरों को खूबसूरत अंदाज देने में पेंसिल का सबसे अहम योगदान है । कम ही लोगों को इस बात की जानकारी होगी कि लेखनी को खूबसूरत अंदाज देने वाली पेंसिल पेंसिल की खोज 1954 में हुई थी। पहली अमेरिकी पेंसिल का निर्माण 1812 में हुआ था । इसे बनाने के लिए सबसे पहले ग्रेफाइट को शीट के आकार में काटा जाता था और फिर इसे गोल रॉड में ढालते थे। इसके बाद पेंसिल बनाने के लिए इस गोल रॉड को लकड़ी के गोल सांचे में फिट करते थे। 15वीं सदी के मध्य से पहले पेंसिल का इस्तेमाल केवल कलाकार ही करते थे। पेंसिल शब्द लैटिन के 'पेनीसिलस' से लिया गया है, जिसका अर्थ होता है, छोटी पूंछ ।

पेंसिल की यात्रा एक वृक्ष से ही आरंभ होती है, देवदार वृक्ष से जो उत्तरी कैलीफोर्निया और ऑरेगन में पाया जाता है। देवदार की लकड़ी के लठ्ठों को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटा जाता है। पेंसिल की लंबाई की लम्बी पट्टी जो चौथाई इंच से कम मोटी होती है, को भट्टों में सुखाया जाता है, और फिर इन्हें सुंदर बनाने के लिए हल्के रंगों से रंगा जाता है, उपरी पट्टी को चिकना कर दोबारा भट्टी में सुखाया जाता है। प्रत्येक पट्टी को एक जटिल मशीन से आठ नालियों वाला बनाया जाता है और इस पर सरेस लगाया जाता है फिर उसके ऊपर दूसरी पट्टी लगाई जाती है, इसे लैड सैंडविच कहा जाता है। लकड़ी के तैयार सैंडविच को मशीन से तराश कर काटा जाता है। पेंसिल का लेड अपने आप में काफी जटिल होता है। और कोई लैड इसमें नहीं मिलाया जाता।

ग्रेफाइट की खुदाई शिलॉन में होती है। ग्रेफाइट को चिकनी मिट्टी में मिश्रित किया जाता है। जिसमें परिष्कृत करने की प्रक्रिया में अमोनियम हाइड्रोआक्साइड का इस्तेमाल होता है । कई मशीनी प्रक्रियाओं से गुजरने के बाद अन्ततः मिश्रण ऐसा दिखता है जैसे सॉसेज ग्राइंडर से निकला हो। इसे आकार में काटा, सुखाया और कई घंटों के लिए 1850 डिग्री फारैनहाइट पर पकाया जाता है। लेड को चिकना और मजबूत बनाने के लिए इसके साथ एक खास मिश्रण का इस्तेमाल होता है जिसमें मैक्सिको का मोम, पैराफीन वैक्स, और हाइड्रोनेटेड प्राकृतिक वसा शामिल होते हैं। इन सबके बाद इस पर 6 तह मोटी वार्निश लगाई जाती है।

इसके बाद वह हिस्सा जिसका इस्तेमाल लिखी गई गलातियों को मिटाने के लिए किया जाता है वह एक तत्व जिसे 'फैक्टीस' कहा जाता है, मिटाने का काम करता है। यह एक रबड़ जैसा उत्पाद होता है जो ईस्ट इंडीज से प्राप्त टोरिया के तेल को सल्फर क्लोराइड के साथ प्रतिक्रिया कराकर बनाया जाता है। आरंभिक दौर में सभी पेंसिल पीले रंग की बनाई जाती थीं। इसका कारण था इसके ग्रेफाइट का चीन से आना । चीन में इस रंग को भव्यता का रंग माना जाता था और चीन ने ग्रेफाइट देने से पहले यह शर्त रखी थी कि सभी... देश पेंसिल को पीले रंग में ही बनायेंगे ।

क्या आप जानते हैं कि आपकी पढ़ाई की साथी आपकी पेंसिल का सबसे पहला रूप कैसा था? दुनिया की पहली पेंसिल ग्रेफाइट छड़ों का एक गुच्छा मात्र थी जिन्हें एक डोरी से बांधा गया था। इसके बाद किसी ने सोचा... इसके बाद किसी ने सोचा कि ग्रेफाइट छड़ को एक लकड़ी की खोखली छड़ के अंदर रखना चाहिए। जोसेफ रिचेंडॉरफर पहले व्यक्ति थे जिन्होंने पेंसिल के टॉप पर रबर लगाने के बारे में सोचा। ताकि लिखते वक्त हुई गलतियों को आसानी से ठीक किया जा सके।

क्या आप जानते हैं कि आपकी एक पेंसिल से आप 35 मील लंबी लाइन खींच सकते हैं या अंग्रेजी के 50,000 शब्द लिख सकते हैं। पेंसिल से शून्य गुरुत्वाकर्षण में लिखना भी संभव है। दुनिया के कई देशों में 19 नवंबर को पेंसिल दिवस मनाया जाता है। इसी दिन अमेरिकी वैज्ञानिक हॉफमेन लिनमेन को रबर लगी हुई पेंसिल बनाने का पेटेंट मिला था। कई यूरोपीय देशों में इसे फ्री पेंसिल डे भी कहा जाता है तो यह है आपके और हमारे काम में आने वाली पेंसिल की कहानी ।

अमर प्रेम का साक्षी : मांडू

रानी रूपमती और बादशाह बाज बहादुर के अमर प्रेम का साक्षी है मध्य प्रदेश स्थित मांडू। यहाँ के खंडहर व इमारतें हमें इतिहास के उस झरोखे के दर्शन कराते हैं, जिसमें हम मांडू के शासको की विशाल समृद्ध विरासत व शानो-शौकत से रूबरू होते हैं। रानी रूपमती का किला इनके प्यार का साक्षी है। रानी रूपमती को राजा बाज बहादुर इतना प्यार करते थे कि रानी रूपमती के बिना कुछ कहे ही वो उनके दिल की बात को समझ जाते थे। राजा बाज बहादुर और रानी रूपमती के प्यार के साक्षी मांडू में 3500 फीट की ऊंचाई पर बना रानी रूपमती का किला है। कहते हैं कि रानी रूपमती नर्मदा नदी को देखे बिना भोजन ग्रहण नहीं करती थीं। इसलिए राजा बाज बहादुर ने रानी रूपमती की इच्छा का ध्यान रखते हुए रानी रूपमती किले का निर्माण करवाया। रानी रूपमती के किले से नर्मदा नदी नजर आती है। कहा जाता है कि रानी रूपमती प्रतिदिन स्नान के बाद यहां पहुंचतीं और नर्मदा जी के दर्शन उपरांत अन्न ग्रहण करती थीं। राजा बाज बहादुर रानी रूपमती को बेहद ही प्यार करते थे शायद इसलिए रानी रूपमती के महल तक पहुंचने से पहले राजा बाज बहादुर के महल को पार करना होता था। राजा बाज बहादुर रानी रूपमती की रक्षा के लिए यह सब करते थे। इसलिए शायद आज भी रानी रूपमती के किले को राजा बाज बहादुर और रानी रूपमती की प्रेम कहानी का प्रतीक समझा जाता है।

रानी रूपमती-बाज बहादुर एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक प्रेमकथा है। रूपमती को सुल्तान बाज बहादुर काफी प्रेम करते थे। यह अंतर्धार्मिक विवाह था। इनकी प्रेम कहानी युद्ध, प्रेम, संगीत और कविता का अद्भुत सम्मिश्रण है। बाज बहादुर मांडू के अंतिम स्वतंत्र शासक थे। रूपमती सारंगपुर गांव के किसान की पुत्री और दक्ष गायिका थीं। एक दिन बेहद खूबसूरत एक लड़की अपनी सहेलियों के साथ मस्ती में झूमते गाते हुए जा रही थी, तभी वहां सेशिकार पर निकले राजपुरुष ने किसान की युवा बेटी की सुरीली तान सुन ली। वह इस अप्रतिम खूबसूरती और सुरीली आवाज का दिवाना हो गया। यह युवा और कोई नहीं मालवा का सुल्तान था बाज बहादुर, जिसकी राजधानी मांडू थी। बाज बहादुर ने इस युवती रूपमती के सामने शादी का प्रस्ताव रखा और मांडू चलने का आग्रह किया तो वह सहमत हो गई। दोनों ने हिंदू और मुस्लिम रीति से विवाह किया, क्योंकि बाज बहादुर मुस्लिम थे और रूपमती हिंदू थी। मांडू उस समय मालवा की राजधानी थी। बाजबहादुर ने यहां पर रानी रूपमती का खूबसूरत महल का निर्माण 16 वीं शताब्दी में करवाया था। रूपमती के इस महल में रेवा कुंड का निर्माण भी किया गया था। रूपमती अपने इसी महल से नर्मदा के दर्शन करती थीं। संगीत प्रेमी नवाब बाजबहादुर रानी रूपमती के सौंदर्य और उसकी सुरीली तान में खोया हुआ रहता था। रूपमती की खूबसूरती के किस्से चारों ओर फैल रहे थे। रूपमती की खूबसूरती के किस्से सुनकर अकबर के सेनापति अधम खान ने उसे हासिल करने के लिए वर्ष 1561 में मांडू पर हमला कर दिया। उनकी यह प्रेम कहानी जल्दी ही खत्म हो गई, जब मुगल सम्राट अकबर ने मांडू पर चढ़ाई करने के लिए अधम खान को भेजा। बाज बहादुर ने अपनी छोटी-सी सेना के साथ उसका मुकाबला किया किंतु हल्के प्रतिरोध के बाद नवाब बाजबहादुर की सेना अधम खान के सामने टिक नहीं सकी। बाज बहादुर सहायता मांगने के लिए चित्तौड़गढ़ भाग गया। लेकिन रूपमती महल में ही रह गईं। अधम खान रानी रूपमती के सौंदर्य पर मर-मिटा, इससे पूर्व कि वह मांडू के साथ रूपमती को भी अपने कब्जे में लेता, रानी रूपमती ने विष सेवन करके मौत को गले लगा लिया और आबरू के लिए जान दे दी इसके बाद अधम खान हाथ मलता रह गया। इस तरह रानी रूपमती और बाजबहादुर की एक प्रेम कहानी का दुःखद अंत हो गया। लेकिन मांडू में खड़े ऐतिहासिक महल आज भी उस सच्ची प्रेम कहानी की गवाही दे रहे हैं।

— अश्वनी सिंह

कार्तिक पूर्णिमा

हिंदू धर्म में पूर्णिमा का व्रत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्रत्येक वर्ष 12 पूर्णिमाएं होती हैं। जब अधिकमास या मलमास आता है तब इनकी संख्या बढ़कर 13 हो जाती है। कार्तिक पूर्णिमा को त्रिपुरी पूर्णिमा या गंगा स्नान के नाम से भी जाना जाता है। इस पूर्णिमा को त्रिपुरी पूर्णिमा की संज्ञा इसलिए दी गई है क्योंकि आज के दिन ही भगवान भोलेनाथ ने त्रिपुरासुर नामक महाभयानक असुर का अंत किया था और वे त्रिपुरारी के रूप में पूजित हुए थे। ऐसी मान्यता है कि इस दिन कृतिका में शिव शंकर के दर्शन करने से सात जन्म तक व्यक्ति ज्ञानी और धनवान होता है। कार्तिक पूर्णिमा के दिन गंगा स्नान, दीप दान, हवन, यज्ञ आदि करने से सांसारिक पाप और ताप का शमन होता है। इस दिन किये जाने वाले अन्न, धन एवं वस्त्र दान का भी बहुत महत्व बताया गया है। इस दिन जो भी दान किया जाता है उसका कई गुणा लाभ मिलता है। मान्यता यह भी है कि इस दिन व्यक्ति जो कुछ दान करता है वह उसके लिए स्वर्ग में संरक्षित रहता है जो मृत्यु लोक त्यागने के बाद स्वर्ग में उसे पुनः प्राप्त होता है।

इस दिन चन्द्र जब आकाश में उदित हो रहा हो उस समय शिवा, संभूति, संतति, प्रीति, अनुसूया और क्षमा इन छः कृतिकाओं का पूजन करने से शिव जी की प्रसन्नता प्राप्त होती है। इस दिन गंगा नदी में स्नान करने से भी पूरे वर्ष स्नान करने का फल मिलता है।

इसी दिन भगवान विष्णु ने प्रलय काल में वेदों की रक्षा के लिए तथा सृष्टि को बचाने के लिए मत्स्य अवतार धारण किया था।

महाभारत काल में हुए 18 दिनों के विनाशकारी युद्ध में योद्धाओं और सगे संबंधियों को देखकर जब युधिष्ठिर कुछ विचलित हुए तो भगवान श्री कृष्ण पांडवों के साथ गढ़ खादर के विशाल रेतीले मैदान पर आए। कार्तिक शुक्ल अष्टमी को पांडवों ने स्नान किया और कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी तक गंगा किनारे यज्ञ किया। इसके बाद रात में दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए दीपदान करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। इसलिए इस दिन गंगा स्नान का और विशेष रूप से गढ़मुक्तेश्वर तीर्थ नगरी में आकर स्नान करने का विशेष महत्व है।

कार्तिक पूर्णिमा को गोलोक के रासमण्डल में श्री कृष्ण ने श्री राधा का पूजन किया था। हमारे तथा अन्य सभी ब्रह्मांडों से परे जो सर्वोच्च गोलोक है वहां इस दिन राधा उत्सव मनाया जाता है तथा रासमण्डल का आयोजन होता है। कार्तिक पूर्णिमा को श्री हरि के बैकुण्ठ धाम में देवी तुलसी का मंगलमय पराकाट्य हुआ था। कार्तिक पूर्णिमा को ही देवी तुलसी ने पृथ्वी पर जन्म ग्रहण किया था। कार्तिक पूर्णिमा को राधिका जी की शुभ प्रतिमा का दर्शन और वन्दन करके मनुष्य जन्म के बंधन से मुक्त हो जाता है। इस दिन बैकुण्ठ के स्वामी श्री हरि को तुलसी पत्र अर्पण करते हैं। कार्तिक मास में विशेषतः श्री राधा और श्री कृष्ण का पूजन करना चाहिए।

जो कार्तिक में तुलसी वृक्ष के नीचे श्री राधा और श्री कृष्ण की मूर्ति का पूजन निष्काम भाव से करते हैं उन्हें जीवनमुक्त समझना चाहिए। तुलसी के अभाव में आंवले के नीचे पूजन करनी चाहिए। कार्तिक मास में पराये अन्न, गाजर, दाल, चावल, मूली, बैंगन, घीया, तेल लगाना, तेल खाना, मदिरा, कांजी का त्याग करें। कार्तिक मास में अन्न का दान अवश्य करें। कार्तिक पूर्णिमा को बहुत अधिक मान्यता मिली है। इस पूर्णिमा को महाकार्तिकी भी कहा गया है। यदि इस पूर्णिमा के दिन भरणी नक्षत्र हो तो इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। अगर रोहिणी नक्षत्र हो तो इस पूर्णिमा का महत्व कई गुणा बढ़ जाता है। इस दिन कृतिका नक्षत्र पर चन्द्रमा और बृहस्पति हों तो यह महापूर्णिमा कहलाती है। कृतिका नक्षत्र पर चन्द्रमा और विशाखा पर सूर्य हो तो पद्मक योग बनता है जिसमें गंगा स्नान करने से पुष्कर से भी अधिक उत्तम फल की प्राप्ति होती है।

शास्त्रों में वर्णित है कि कार्तिक पूर्णिमा के दिन पवित्र नदी व सरोवर एवं धर्म स्थान में जैसे, गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा, गंडक, कुरुक्षेत्र, अयोध्या, काशी में स्नान करने से विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है। कार्तिक माह की पूर्णिमा तिथि पर व्यक्ति को बिना स्नान किए नहीं रहना चाहिए।

सिख सम्प्रदाय में कार्तिक पूर्णिमा का दिन प्रकाशोत्सव के रूप में मनाया जाता है। क्योंकि इस दिन सिख सम्प्रदाय के संस्थापक गुरु नानक देव का जन्म हुआ था। इस दिन सिख सम्प्रदाय के अनुयायी सुबह स्नान कर गुरुद्वारों में जाकर गुरुवाणी सुनते हैं और नानक जी के बताये रास्ते पर चलने की सौगंध लेते हैं। इसे गुरु पर्व भी कहा जाता है।

— स्वीटी प्रसाद

हंसगुल्ले

टीचर : जब कोई विशाल प्रागैतिहासिक जीव सो रहा हो तो उसे क्या कहते हैं।

बच्चा : डायनोसोर !

टीचर: क्यूबा में कौन सी भाषा बोली जाती है?

बच्चा : क्यूबिक

बॉस: तुम कहाँ पैदा हुए थे?

नौकर : भारत में।

बॉस: कौन से हिस्सा?

नौकर : किस हिस्सा का क्या मतलब?
पूरा शरीर भारत में पैदा हुआ था।

साक्षात्कार लेने वाला: तुम्हारे जन्म की तारीख क्या है?

उम्मीदवार : 13 अक्तूबर।

साक्षात्कार लेने वाला: किस साल?

उम्मीदवार : हर साल।

संता: बीवी से झगड़ा खत्म हुआ क्या?

बंता: घुटनों पर चलकर आई थी मेरे पास।

संता: क्या बोली?

बंता: बोली पलंग के नीचे से निकल आओ, अब नहीं मारूंगी।

एक दिन अकबर बादशाह किसी खास मसले पर बीरबल से बातें कर रहे थे। अचानक बीरबल के बहुत रोकने पर पर भी उनकी छींक निकल पड़ी।

बादशाह ने कहा, “बीरबल तुम बड़े बेवकूफ हो।

”बीरबल ने हौले से उत्तर दिया,

“जी जहाँपनाह, पर मैं आपसे बड़ा कभी न हो सकूंगा।”

बाबा : बच्चा, तुझे स्वर्ग मिलेगा...

लड़का: स्वर्ग....

बाबा : आओं और कुछ दक्षिणा दे जाओ...

लड़का: ठीक है जाओ दक्षिणा में मैंने आपको बम्बे दिया

आज से मुंबई आपका हुआ...साधू (गुस्से में) : मुंबई क्या तेरी है ? जो मुझे दे रहा है...

लड़का : तो क्या स्वर्ग तेरे बाप ने खरीद रखा है ???

जो तू यहाँ आकर स्वर्ग के प्लॉट बांट रहा है...

पति : तुम्हारे साथ शादी करके मुझे 1 फ़ायदा तो हुआ है!!

पत्नी (खुश होते हुए) : कौनसा फ़ायदा ??

पति : मुझे मेरे गुनाहों की सज़ा इसी दुनिया में ही मिल गयी!!!

— रजनी

सस्ती बिजली की खोज

बिजली की खोज एक नए मुकाम की ओर बढ़ रही है और इसमें कुछ भूमिका भारत की भी होगी। तीन-चार महीने पहले प्रतिष्ठित अमेरिकी शोध संस्थान एमआईटी की एक टीम ने फोटोसिंथेसिस की एक ऐसी विधि खोज निकालने का दावा किया है जो सूरज की रोशनी से बिजली बनाने में सोलर सेलों से भी ज्यादा उत्तम है। फोटोसिंथेसिस वह प्रक्रिया है, जिसके जरिए पौधे सूरज की रोशनी से अपना खाना बनाते हैं। मनुष्य समेत दुनिया के सभी जानवर अपने भोजन के लिए प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पौधों पर ही निर्भर हैं। जिस पेट्रोल, डीजल, कोयले या गैस से संसार के सारे कारोबार चलते हैं, वह भी करोड़ों साल पहले जमीन में दबे पेड़-पौधों की ही देन है। दूसरे शब्दों में कहें तो ऊर्जा के इन सारे रूपों की जड़ फोटोसिंथेसिस है। लेकिन इंसान इसे आज तक कर नहीं पाया है।

ऐसा माना जा रहा है कि यह काम सिर्फ डेढ़ लीटर साफ या गंदे, कैसे भी पानी के जरिए संभव है। दो-चार साल पहले ऐसा दावा वैज्ञानिक हलकों में गप्प जैसा ही समझा जाता था। इसकी सफलता को लेकर संदेह आज भी बने हुए हैं। टाटा से हुए करार के मुताबिक नोसेरा की टीम को अगले डेढ़ साल में फ्रिज जितना बड़ा और कमोबेश उतनी ही कीमत वाला एक ऐसा यंत्र बनाना है, जो एक छोटे घर की जरूरत भर की बिजली बना सके। बिजली के तीनों बड़े स्रोतों- हाइडेल, थर्मल और न्यूक्लियर- को फिलहाल कुछ बड़े सवालियों का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे में सूरज की अक्षय ऊर्जा ही दुनिया के लिए उम्मीद की अकेली किरण बची है।

मोटर टायरों का समाधान

मोटरवाहनों के पुराने टायरों का निपटारा एक विकट समस्या है। इन्हें जलाने पर जहरीला धुंआ निकलता है। ये कुदरती तरीकों से नष्ट भी नहीं होते इसलिए इन्हें जमीन में दफनाने से भी कोई लाभ नहीं है। न ही इन्हें नदियों, तालाबों और समुद्र में फेंका जा सकता है, क्योंकि ये तैरते हैं और लहरों के साथ तट पर ही लौट आते हैं। कई विकसित देशों में जहां मोटरवाहनों का अत्यधिक चलन है, टायरों के पहाड़ के पहाड़ इकट्ठे होते जा रहे हैं, और उन्हें फेंकने के लिए जगह कम पड़ती जा रही है। पहले जापान की बात करें तो वहां मोटरकारों के पुराने टायरों से भारी किस्म का तेल व कोयला बनाने की एक विधि विकसित कर ली गई है। यह काम जापान के राष्ट्रीय पर्यावरण संरक्षण केंद्र ने किया है।

इस विधि में टायरों को गरम करके विघटित किया जाता है, जिससे वाष्प के रूप में तेल प्राप्त होता है। आसवन पद्धति से इस वाष्प को परिशुद्ध करके भारी तेल प्राप्त किया जाता है। एक टन टायरों से 400 लिटर शुद्ध तेल प्राप्त होता है। तेल निकालने के बाद बचे अंशों को 800 अंश सेल्सियस पर पकाकर उसमें मौजूद जस्ते को नष्ट किया जाता है। इस तरह प्राप्त जस्ता-मुक्त कोयले का उपयोग पानी को शुद्ध करने के लिए किया जा सकता है। तेल तथा इस प्रक्रिया के दौरान उत्पन्न ऊष्मा का उपयोग ऊर्जा के रूप में भी हो सकता है। चूंकि टायरों को जलाया नहीं जाता, इसलिए काला और प्रदूषणकारी धुंआ भी नहीं बनता। भारत की देशी बुद्धि इस समस्या से अलग प्रकार से निपट रही है। पुराने मोटर टायरों को सुधरी हुई बैल और ऊंट गाड़ियों में खपाया जा रहा है। ऊंट गाड़ियों के लिए हवाई जाहाजों के पुराने टायर बहुत उपयुक्त रहते हैं।

गुजरात में पुराने टायरों को काटकर उनसे अनेक उपयोगी चीजें बनाने का एक भरा-पूरा व्यवसाय ही चलता है। यदि आप पंचमहल जिले के हलोल गांव में से होकर गुजरें, तो आपको ऐसे अनेक दुकानें मिलेंगी जहां कारीगर विभिन्न आकारों के पुराने टायरों को काटने और उनकी परतों को अलग कर लिया जाता है और इन परतों से खनन करनेवाली मशीनों और वाहनों के बेल्ट बनवाए जाते हैं। बचे-खुचे कतरनों को कारखानेवाले ईंधन के रूप में खरीद ले जाते हैं। इससे पर्यावरण की सुरक्षा के साथ साथ उनका बेहतर उपयोग हो सकता है

— मिंटू सिंह

अपनी हिन्दी

अंग्रेजी के करीब इतना ही रहीए कि
हिंदी पर भी एतबार रहे
हिंदी से इतना दूर भी मत जाइए कि
हिन्दी को इंतजार रहे
अंग्रेजी के तो मूल शब्द हैं
लगभग दस हजार पर
हिंदी लाखों शब्दों से
है गुले गुलजार
अंग्रेजी साहित्य में चौसर शेक्सपियर
कीट्स का नहीं है कोई सानी पर
हिंदी में तुलसी, मीरा, पंत, प्रेमचंद,
निराला का लोहा सारी दुनिया ने मानी
फ्रांस में फ्रेंच, चीन में चाइनीज
और रूस में रशियन भाषा दिखती है
पर अपना ही एक देश है ऐसा
हिन्दी कम अंग्रेजी अधिक बिकती है
अंग्रेजी का अपना है महत्त्व
इससे नहीं इंकार पर
हिंदी अपने ही घर में संक्रमित हो जाए
नहीं है स्वीकार
हिंदी राष्ट्रभाषा संपर्क भाषा
और जनभाषा के साथ साथ
बनी भारत की राजभाषा है
अगर हमारे प्रयास में
रही ईमानदारी तो एक दिन
यह विश्व की नंबर एक भाषा है

68 साल पहले मिला
हिंदी को राजभाषा का दर्जा
आज देश के हर कोने में

हिंदी दिवस और
पखवाड़ा मनाया जाता
चाहे वर्द्धवान हो या वर्धा
जिस देश का प्रधानमंत्री
विश्व के मंच पर हिंदी में दे भाषण
क्यों बढ़े मान हिन्दी का
फिर क्यों न हो हम भी गौरवान्वित
यदि लगा दें हम अपना योगदान भी
तो क्यों न चमकेगी हिंदी
अभी तो हिंदी के अच्छे दिन हैं
और अच्छे दिन ही आएंगे
— निशीथ कुमार

मुक्तक

धरती के उस पार भी कोई रहता है
पर उसका पता कौन बताएगा
जो जानता है उसको
पूछने पर वह मौन मुस्कुराएगा

जमाने में बहुत कुछ जानने के लायक है
पर जान कर भी होगा क्या
कौन बताएगा इस जहां में
बहुत कुछ जानने वालो का हुआ क्या

अगर किस्मत साथ देती
वह सोचता है वह भी अमीर होता
हर कोई अमीर है
पर उसे इस बात का पता नहीं होता

— संतोष कुमार

मालदा मंडल द्वारा डीजल शेड जमालपुर में आयोजित प्रेमचंद जयंती समारोह से संबंधित कुछ दृष्य



मालदा मंडल द्वारा स्वच्छता के संबंध में जागरूकता फैलाने के लिए जमालपुर रेलवे स्टेशन पर किए गए नुक्कड़ नाटक के कुछ दृश्य

